Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

* श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः *

॥ श्रीचन्द्रकलायै नमः ॥

श्रीयुगलप्रिया पदावली

॥ राग भैरो ॥

नमो श्रीअग्रस्वामि पदकंजु ।
प्रिय वानी रसिकन मन मोदक बोधक विपुल रास रस मंजु ॥
रसिकवर्य रसिकन मत मंडन खंडन असद विषै भ्रम पुञ्ज ।
नमो श्री जैति जैति प्रमोद बन पिय प्यारी संग रहसि निकुञ्ज ॥
नमो श्री जैति जानकीवल्लभ नाम रसिक रसनावलि गुंज ।
प्रीति रीति परतीति लली पद युगलप्रिया हिय तमसि विधुंज ॥१॥

जै श्री चन्द्रकला अलवेली ॥ अति सुकुमारि रूप गुन आगरि नागरि गर्व गहेली ॥ निमि कुल प्रगटि संग सिय प्यारी प्रियकारी रस केली । चंद्रप्रभाजू के सुकृत कल्पतरु उलही लता नवेली ॥ कांचनवन कमला प्रमोदवन लीला लहरि रीझेली । मोहनि जंत्र बीन स्वर टेरति प्रीतम चित्त विथेली ॥ सरनागत पालिनि रसमालिनि चालिनि गजगति हेली । युगलप्रिया अनुराग सदा संबंध राग की डेली॥२॥

॥ राग धेमन ॥

मिथिला बिनु नाते नहिं दरसे । पढ़ै गुनै समुझै समुझावै पोथी लादै खरसे ॥ लसति अनादि थली मणि भूमी मुक्ति फिरै घर घर से । विहरत सदा रसिक रघुनंदन लली चरणरज परसे ॥ यही जानि सुखमानि बसी सब कांचनवन रस अरसे । सची सारदा रमा भवानी कमला सेवन कर से ॥ जे रूखे रस कथा पगे नहिं मोह निसा प्रिय चर से । लहैं न रसिक गुरुन संगति भव बहै नदी ग्रह गरसे ॥ परम रसिक सिंगार अहारी जग नभ बसि जलधर से । कामादिक पवनहुं गति थाकी काल डरत जेहि डर से ॥ सूरति मिथिला सब अङ्ग सिथिला विरह चढ़ी जनु ज्वर से । विरही जिज्ञासू साली लखि कृपा प्रेम जल बरसे ॥ रसिकन की गति अकथ कहानी सङ्ग लहै तो सरसे । अग्रस्वामि रस रीति मिलन को युगलप्रिया जिय तरसे ॥३॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ राग बसंत ॥

मन अटकि रह्यो यमुना की कुञ्ज । मिथिला की भूमि रस वहति पुञ्ज ॥ रविनंदिनि नाहि अनादि थली । हिमवंत सुता निमिवंस पली ॥ एक रूप सियाजु के साथ रहै । द्रव रसिक जनन हिय ताप दहै ॥ जंबू दीपा सुकृतालि साजि । द्रुम दोउ किनार यामुन विराजि ॥ केतकी गुलाबी चंपकालि । प्रफुलित कुंजैं जनु पहिरि मालि ॥ फुलवारी लालन मिलन हेत । जमुना रसिकन सुख प्रगट देत ॥ गिरिजा प्रिय वहिनि विराजमान । वृहद्विष्णुपुरान वखान जान ॥ सबकी न कहौ रसिकन के मते । जिन अग्रस्वामि रस रंग रते ॥ लखि युगलप्रिया तहँ रास धाम । जमुना जमुना रट अष्टजाम ॥४॥

मन वस्यो अवध की गलियाँ । महल विचित्र कनकमनि मंडित निरखि मनोरथ फलियाँ ॥ कंचन कोट फटिक मनि चित्रित नग जगमग छवि छलियां । खाई निर्मल जल परिपूरित मिलि सरजू रंग रलियाँ ॥ चहुंदिशि बन प्रमोद कंचनमय भूमि विराजत भलियाँ । कुञ्ज कुञ्ज प्रति पुञ्ज पुञ्ज गुन आगरि नागरि अलियाँ ॥ भीतर चौक बजार हजारनि भिन्न भिन्न रंग थलियाँ । नृप सुत युगलप्रिया के जीवन जनकरायजू की ललियाँ ॥५॥

॥ राग गौरी ॥

अवध की भूमि सोहावन जानी । अरुण पीत सित मणिमय राजति रसिकन दृग लपटानी ॥ श्रीसरयू सब सरित सिरोमनि वेद पुरान वखानी । जहां नित्य विलसत पिय प्यारी बन प्रमोद सुख खानी ॥ जिनके युगल विहार कथा निति तिन यह पथ पहिचानी । युगलप्रिया निशि बासर ध्यावति रीझि रीझि सुखमानी ॥६॥

हमरे श्रीबनप्रमोद रस दानी । विविधि कुञ्ज द्रुमलता सोहावन निरखत छवि मनमानी ॥ योग ज्ञान अरु नेम दान व्रत इन सबकी न प्रधानी । प्रेम लक्षना भक्ति सिरोमनी चहूंओर सरसानी ॥ सरजू सोम विटप रतनागिरि छवि नहिं जात वखानी । युगलप्रिया यह रस विलास पथ संत कृपा ते जानी ॥७॥

॥ राग काफी एकताला ॥

अवधपुर नित्य विहारी राम ॥ चहुंदिशि जिनके कंचन अवनी बन प्रमोद सुखधाम ॥ द्वादस चतुर्विंश जेहि भीतर भिन्न सीम गुन नाम । तहाँ तहाँ विहरत युगल विहारी दिये अंशन भुज दाम ॥ कुंज कुंज प्रति अमित सहचरी सेवन विधि अनुयाम । मिटत त्रिगुन चन्द्रार्क वरुण यम ए नहिं मिटत ललाम ॥ जे जन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रसिक भक्त सेवन करि पायो रति अष्टजाम। मानस सरसि भाव सुचि अंबुज युगलप्रिया विश्राम ॥८॥

भोरे चन्द्रकला अलबेली वीन बजाई प्यारी। विमलादिक निज कुञ्ज कुञ्ज ते आनि जुरी एक सारी॥ कनक निकुञ्ज भवन पलका पै पौढ़े युगल विहारी। उठि अलसात जम्भात रंग भरि अखिया सुरति खुमारी॥ विपुल थार सेवा सौंजनि करकंजनि मंजु सुधारी। अग्रभाग श्रीअग्रसहचरी युगलप्रिया बलिहारी ॥९॥

॥ राग ललित ॥

प्रीतम प्यारी सिय सुकुमारी जागे दोऊ भोर॥ आलस भरे ऐंडात परसपर अखियाँ अति चितचोर॥ नाशामनि वेशरि अधरन पर हलत सरस दुहुंओर। मनहुं शुक्र सुरगुरु विचरत हैं कंज कोश के कोर॥ रूप गर्विता नव नागरि पिय नागर श्याम किशोर। युगलप्रिया दोउ अवधि विहारी जो कछु कहिय सो थोर ॥१०॥

॥ राग भैरो चौताल ॥

ये जागे श्याम सिया संग रंग भरे रंगमहल कनकभवन शैन कुञ्ज धाम। अलसोहैं सोहै नैन झपकोहै मोहै मैन अंग अंग सुरत समर छाम॥ निज कुञ्ज ते छटा सी छवि पुंज पुंज आई चन्द्रकलादिक वाम। वीना मृदङ्ग उपङ्ग कठतार चंग मिलित चरित गावती ललाम॥ यह रसराज समाज विलोकत विसरयो है सब मन काम। युगलप्रिया मगन एई रसिकन धन मिलन हेतु रटति युगल नाम ॥११॥

आजु सुकुमारी चली है सुधारी। निज अंग अंग में भूषन बसन संवारी रति कोटिन वारी॥ थारें करकंज धारी चन्द्रकलाजू की बारी, आई है विपुल निज लखि अधिकारी॥ चली गान करत हरत मन लखि छवि कनकभवन सैन कुञ्ज ढिग चारी। उठे दोउ लाल भाल भाग जाग सबहिं के अबहिं के युगलप्रिया के भाग भारी ॥१२॥

राजत श्यामा श्याम सुजान। सरजू तीर निकुञ्ज भवन में राम सिया रस खान॥ आलस भरे उनीदे लोचन निरखत अति सुखदान। रुचि सों भैरो राग अलापत लै लै सुन्दर तान॥ चंद्रकला सखि अलक संवारहिं लखें मंद मुसुकान। रसिक जनन के जीवन दोऊ युगलप्रिया के प्रान ॥१३॥

॥ राग विलावल चौतारो ॥

पलंग ते उतरि दोउ चौकी रतन जटित तापै बैठि लाल प्यारी दंतधावन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

करत । कंचन रतन झारि युग अलि करकंज धारि सरजु वारि वारि देत मुख छवि दृग भरत ॥ दीरघ आदर्श देखि चन्द्रकला तन सुपेखि दीर्घ नैन के कटाक्ष आलसता हरत ॥ युगलप्रिया कोमल पट मुख दृग करकंज पोछि चरन परसि रसिक जननि जीवन धन धरत ॥१४॥

॥ राग ललित बहार ॥

मैं वारो युगल पर वारी । दशरथजू के श्याम सलोने गोरी श्रीजनकदुलारी ॥ नवल निकुंज नवल वनिता चहुंदिशा लसति अति प्यारी । गान सरस वीना मृदंग धुनि युगलप्रिया बलिहारी ॥१५॥

नई लगन ललन तोसे लागी । या मिथिला की आवनि मै तेरी विपुल अली छवि पागी ॥ लै चलु पिय प्रमोदवन में जहां ऋतु वसंत अनुरागी । अवध रङ्ग मणि महल कांचनी युगलप्रिया बड़भागी ॥१६॥

॥ राग काफी तिताला ख्याल ॥

लाडिली बनी अलवेली बना मतवारो । श्रीमिथिलेस कुमारि सरस छवि दशरथ राज दुलारो ॥ श्याम गौर नखशिख सुखमा ठनि अङ्ग-अङ्ग छवि भारो । युगलप्रिया दरशन के मनोरथ तलफत प्रान हमारो ॥१७॥

॥ राग कलंगडा पर्ज खेमटा ॥

मैं वारी बना रतनारे नैन पर वारी । श्याम सुजान लाल दशरथ के सुन्दर अवध विहारी ॥ कञ्ज खञ्ज मृग मीन वारियत जुलफैं भँवर अतिकारी । नासामनि की हलनि अधर पर युगलप्रिया वलिहारी ॥१८॥

जादू भरी राम तुमरी नजरिया । जेहि चितवत तेहि वस करि राखत सुन्दर श्याम राम धनुधरिया ॥ जुलफन युत मुखचन्द्र प्रकाशित नासामणि लटकन मन हरिया । युगलप्रिया मिथिलापुर वासिन फसी जाल विच मानो मछरिया ॥१९॥

चलोनी सदके जादी बना आया महबूब ॥ लली जो मिथिलापति की लालन अवध के भूप । अङ्ग अङ्ग ठगौरी डारी चस्मोदीपानी खूब ॥ युगलप्रिया बनी गोरी बना साँवल स्वरूप । युगल की सेवा भूमि रसिकन की लगन दूब ॥२०॥

रंगीला बना आयानी दिलदार देखो अलियां । अवध को छैला बना बनी जनकजू की ललियाँ ॥ चलोनी सदके जादी मिथिला की कुञ्ज गलियां । मिथिला शहर में शोर पड़ी निमि कुलादी चलियां । सुखमा सरों में फूली मानो खिली

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

कंज कलियां ॥ अटारी जो मिली खिली बनी के रङ्ग रलियां। घोड़े पर बना लखी छकी युगलप्रिया पलियां ॥२१॥

॥ राग सोरठ जलद तिताला ॥

रङ्ग भरो ब्याहन आया बना मेरो श्याम सलोना री। दशरथ राजकुमार ललन के अङ्ग अङ्ग टोना री ॥ तैसी बनी दीप दामिनि अङ्ग लज्जित सोना री। युगलप्रिया छवि सुधा पिवो करि अँखिया दोना री ॥२२॥

॥ राग मारू ॥

लालन की छवि जोरी नहीं कही। मिथिलापुर की नारि निहारति मानहुं चन्द्रचकोरी अही। पञ्चवक्र शिव चतुर्मुखी विधि विष्णु चतुर्भुज थोरी लही ॥ उमा रमा ब्रह्मानि रती नहिं है मिथिलेश किशोरी सही। युगलप्रिया उपमेय युगल छवि कवि मति सिन्धु हलोरी रही ॥२३॥

॥ राग टोड़ी चौताल ॥

प्यारीजू तेरो नैन देखि मैन सर सकुचात अनियारी रतनारी डोरी। तेरो इस रूप ध्यान वचन बखान करो गुन मिथिलेश किशोरी ॥ तैसी चन्द्रकला विमलादि शुभगा अनूप सेवाकुञ्ज सावधान सब नव गोरी। युगलप्रिया पिय हिया में लगी है दौरि घन चपला यक ठौरी ॥२४॥

॥ सिन्धु भैरवी ॥

कांचन वन कमला के तीर रंग होरी साज सजाई। चलिये श्रीरघुवंश लाडिले जनकललीजू बुलाई ॥ कुञ्ज रसाल विचित्र मनिनमय रचित परम सुखदाई। सदा बसंतलता द्रुम फूल्यौ भूलत लखि गुमराई ॥ सुनत उठे लालन छवि छाके धरि गलभुज मुसुकाई। चन्द्रकलाजू के भाग्य विभव लखि सची रमा ललचाई ॥ गावत रंग उमंग भरे पिय मानप्रिया ढिग जाई। श्याम कपोल खुल्यो सुन्दरता लली गुलाल लगाई ॥ बाजत साज अनेक जंत्र मिलि गावति अलि समुदाई। युगलप्रिया निरखति गलबहियां उमगि मृदंग बजाई ॥२५॥

॥ राग सोरठ होरी ॥

होरी धूममची मिथिलापति के दरबार। रही बरात मास फागुन लौं नित नई होत बहार ॥ चहुंदिशि महल विचित्र जटित मनि कञ्चन के झलकार। अंगनाई विस्तार बन्यौ मनि मंडप मध्य संवार ॥ तने वितान मखमली जरकस फरस बिछे अति प्यार। अमित सहानी कुण्ड बने रंग नहर चली बहु धार ॥ चन्द्रकला

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अलवेली मुदित यक दोउ दिशि मिलि उपचार। फागु खेलावति अलिगन गावति परे वकुंकुमन मार ॥ बाजत साज अनेक जंत्र मिलि दूलह राजकुमार। गावत उमगि मोहनी छाई प्यारी लई कठतार। सुनत श्रवन दोउ राज मगन मन अगिले चौक लगार। प्रेमा परा वराती उमगे रही न देह संभार ॥ वसि हिय साज समाज रंग छवि रंग महल के द्वार। रामचरण रसिकेश लखाई युगलप्रिया रस सार ॥२६

॥ राग सोरठ होरी ॥

चलि देखिये रंग होरी। मिथिला कांचन वन खोरी ॥ श्रीजनकललीजू की अलियां। जिन उमा रमा छवि छलियां ॥ गलियों में गावत आवै। सिय रघुनन्दन मन भावै ॥ चन्द्रकला वीन सजोरी। चन्द्रावति मृदंग टकोरी ॥ सुभगा जु सप्तस्वर घोरी। सुनि लालन मन उमग्योरी ॥ मिलि होली गावत लाला। प्यारी कर लई कठताला ॥ कमला जु रीझि रंग वरसै। गालैं गुलाल मलि परसैं ॥ पुनि रंग महल अंगनाई। रंगन की नदी वहाई ॥ मण्डप में बैठे जोरी। लखि युगलप्रिया तृन तोरी ॥२७॥

प्यारीजू होरी खेलन आई श्रीसरयूतट कुंज अनूपम धाम। वीना मृदङ्ग उपङ्ग मुचङ्ग सो गावै रंगीली बर वाम ॥ प्रीतम आये धाय अंग ज्यों अनङ्ग छाये प्यारी भाल दै गुलाल बैठे यक ठाम। युगलप्रिया दोउ मूठी गुलाल भरत सब समाज अङ्ग ललाम ॥ २८ ॥

रागश्री धमार।

तन, मन, धन सर्वस वारि फागुन रँगभरी। चंद्रकला विमलादि सखी सब देति रँगीली गारी। दशरथ राजकुमार छैल तव जनकसुता दिशि देखि। वरजहु अपनी अलिन को न तो होइहैं धूम विशेषि ॥ तव हँसि कही लली लालन तुम येक अनेकन नारि। रसिकशिरोमणि साँच सही तव गारी कौन विचारि ॥ मृदु मुसुकाय श्याम नव नागर चतुर कला समुदाय। कञ्चन की पिचकारी रंगन उर मुख मौन धराय ॥ बैठी मृदु मुसुक्यात छवीली मन भाई यह बात। मलि गुलाल पिय मुखमण्डल पै युगलप्रिया वलिजात ॥ २९ ॥

रामलला रस होरी खेलैं। श्रीमिथिलेशसुता गुन आगरि नागरि सङ्ग सकेलैं ॥ रतन जडित पिचकारी श्याम कर सिय शरीर रँग झेलैं। प्यारी कुंकुम अबिर पिया तन श्याम कपोलन मेलैं ॥ कनक भवन सुखसिंधु महल विच कौन कहै रँग रेलैं। युगलप्रिया वीना मृदङ्ग धुनि सुनियत पडति पडेलैं ॥ ३० ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ राम सिंधुरा धमार ॥

आजु रँगभीनी होरी। रंगमहल विच कनकभवन रंग वोरी ॥ जानकी वल्लभ युगुल छैल विमलादि सखिन चितचोरी। अतिविस्तार कुंज मणिमै जहँ फरस विछ्यो जरकोरी ॥ तन्यो वितान मखमली जरकस राजत जरकस डोरी। चारि हौद चहुंओर वन्यो रंग कुंकुम केसर घोरी ॥ मन भावत गावत दोउ साजन वाजत मृदङ्ग टकोरी। कञ्चन की पिचकारि श्याम तन घन वरसत चहुंवोरी ॥ चपला चमकि रही चहुंदिशि अलि अतिहि सरस सिय गोरी। कुंकुम अति सुकुमार अङ्ग करकत इत उत झकझोरी ॥ युगलप्रिया केहि भाँति मिलौं अव अग्रअली गति मोरी ॥३१॥

॥ राग काफी ॥

खेलैं श्रीसरयूतट रङ्गरँगीली फाग री। पुर चहुंओर प्रमोद वनी मणि कञ्चन भूमि विभाग री ॥ तिनमें पूरवदिशि मिथिला सम्वन्ध सदा अनुरागरी। अति विस्तार चौक कल्पद्रुम रंग की चारि तड़ाग री। चारुशिला कमला विमलादिक चन्द्रकला गुन आगरी ॥ देति सुधारि लली लालन कर कुंकुम पिचका नागरी। याही में तत्सुख स्वसुखी सम्वन्ध टहल प्रिय लाग री ॥ जे यहि रीति प्रीति में हुलसत युगलप्रिया वड़भाग री ॥३२॥

खेलैं राम रंगीले आजु रंगीली फाग री। चन्द्रकला विमलादि रंगीली प्यारी रंगीली नागरी ॥ कनकभवन मनि कुंज-कुंज प्रति उमँगिरह्यो अनुराग री। युगलप्रिया अधिकार सदा जेहि अग्रस्वामि पद लाग री ॥३३॥

॥ रागदेश ॥

वनि आई रंगीली नारि फागुन रंग भरी। देखहु सखा सकल रघुवंशी झुंड झुंड जैवारि ॥ सजग होउ न तो अवला प्रवला देहै फौज विडारि। प्रान निछावरि कीन्ही लली पै युगलप्रिया वलिहारि ॥३४॥

॥ राग सिंधु भैरवी ॥

कनकभवन मनिकुञ्ज द्वार रंग धूममची हो होरी आजु। चन्द्रकला बीना प्रवीन चन्द्रावती मृदङ्ग टकोरी ॥ कमला विमला गानकलाजू रंगीली वनी सिया गोरी। तानपुरा कठतार चंग सरंगी रंग भरोरी ॥ राजकुमार श्यामछैला नवनागर गुन गन कोरी। तान लेत प्यारी करतारी युगलप्रिया तृनतोरी ॥ ३५ ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ रागआड़ाना धरौधगार ॥

होरी खेलत प्यारो प्यारी के संग मिलि धाय धाय। दशरथनन्दन जनक नन्दनी बढेउ प्रीति अति गाय गाय॥ श्याम गौर अङ्ग अङ्गन छवि पर घन दामिनि उपमा लजाय॥ विपिन प्रमोद सङ्ग ललना गन जुगलप्रिया मन भाय भाय॥२९॥

होरी खेलन आय सरजू तीर सिय रामलाल॥ श्यामगौर रंग रसिक रंगीले चलत सुघर मृदुमंद चाल॥ महलन वनि ठनि सब आई झोरिन लिये गुलाल बाल। दोउ मिलि तान लेत उमङ्ग सों वाजत वीन मृदङ्ग ताल॥ देखि देखि यह सुख समाज वर जुगलप्रिया अति भई निहाल॥ ३६॥

॥ रागसोरठ धमार ॥

ए हो खेलत दशरथ लाल रंगीली आज रंगीली फाग। ललना कनकभवन श्रीरंगमहल विच विच नजर अबीरीवाग॥ विपुल कुंज चहुंदिशा अलीगन चन्द्रकलादि विभाग। सजिशृंगार वसन भूषन पिय प्यारी परम सोहाग॥ नहर लगी हौदे रंगन की श्रीसरजू अनुराग। भरिडारत पिचकारी पिय पर सिय कुमकुमा पराग॥ चंद्रकलाजु भिजोई दई अंग पिय सिर केसरि पाग। प्यारी करतारी मन हारी वलिहारी प्रिय लाग॥ यह लीला लहरी अवलोकनि मज्जन प्रेम तड़ाग। अग्रस्वामिपथ लह्यौं अमित सुख जुगलप्रिया वड़भाग॥ ३७॥

मति डारो बरजोरी लाला रंगभरी पिचकारियां। अनखानी फौजे की फौजे मिथिलापुर की नारियां॥ तुम तौ हौ कौशलपति वारे हौं मिथिलेश कुमारियां। रघुवंशी सेना संग तुमरे निमि बंशिनि की धारियां। सिमिट लली ढिग आई सिगरी चन्द्रकलादिक नारियां॥ जो सारी पै रंग परैगो लाखौ देउँगी गारियां। मृदुसुसुक्याय सज्यौ पिचका प्यारी कुमकुमा पवारियां॥ जुगलप्रिया लालनकपोल पै दै गुलाल छवि वारियां॥ ३८॥

आजु चलो सजि फौज पिया को मै फाग खेलाऊँ। उनको शान फौज रघुवंसी निमिवंसी देखराऊँ स्यामकी मान नवाऊँ॥ जाय कहौ कोउ अवधलाल ते मैं प्रमोद बन जाऊँ, फाग को साज सजाऊँ। फूल छरी कुंकुमन मारिकै पिय की फौज भगाऊं, तबै निमि वंसी कहाउं। घेरि अकेल गुलाल मेलि मुखचुंवन धूम मचाऊं, ललन की अैंड छोडाऊँ॥ जुगलप्रिया तव नहीं कहौ कछु मिलि हिय कंठ लगाऊं रसिक सों होली गवाऊँ॥ ३९॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

साजि चलौ भली भांति विपिनि में धूम मचाऊं। चन्द्रकलादि सुनो मोरी बातै घातै सकल बताऊं, मिल्यौ सरजु तट जाऊं। मंडल चौक चित्र रचि डारौ कुंकुम ढेर सजाऊं, कपुरे अकाश लगाऊं॥ फूल छरी गेदों की गोली टोली पिय की भगाऊं। सबैमिलि होली गाऊं॥ मोहनि मंत्र बीन तुमरी है ठुमरी तान सुनाऊं। रसिक पिय सुधि बिसराऊं॥ जुगलप्रिया हौं मृदंग बजाऊँ नई-नई उपज धराऊं ललन को पाय पराऊं॥ ४०॥

या नृपनन्दन रामलला सखि सांवलिया मोहि भावै री। सैन करौं सपनो दरसावै दिन प्रति यहि मग आवै री॥ फागुन भाग भरी अलियां जिनके गृह ये नित जावैरी। जुगलप्रिया अनुराग वचन सुनि प्रीतम मृदु मुसुकावै री॥४१॥

सुन्दर रामलला अबहीं गयो या गलियां कोऊ देखै री। हाथ लिये कंचन पिचकारी पीतवसन अंग पेखै री॥ उत ते आय गई सजनी तेहि रंग भरी अवरेखै री। जुगलप्रिया ठाढ़ी पछतातीं वाही की भाग विशेषै री॥४२॥

वनि आई रंगीली होरी या बन प्रमोद की खोरी। उत ठाढ़ो अवधेस ललन वर इत मिथिलेस किशोरी॥ इत अलिगन कुंकुम कर लीन्हे उत पिचकारी सजोरी। जुगलप्रिया बीना मृदंग स्वर छाय रह्यौ चहुंओरी॥ ४३॥

होरी मची प्रमोदविपिन में। इत अलिगन संग राजकिशोरी उत सोहत श्याम सखन में॥ गावै सखी मधुरे स्वर फगुवा सुनि सुख लहै पिय मन में। जुगल प्रिया अनुराग भरे दोउ खेलत फाग दृगन में॥४४॥

खेलत आज रसिक सियानागर रंगरंगीली होरी रे। राजत नवल कनक मंदिर में ललना गन चहुंओरी रे॥ छूटत फुहारैं मुखमंडलहिं गुलाब में केशर घोरी रे। कबहुं कुंकुमा चपल कला करि डारति नवल किशोरी रे॥ तब हंसि रहे श्याम नयनागर प्रीति प्रणय नहिं थोरी रे। युगलप्रिया पिय लखत चंदमुख करि न सकत बरजोरी रे॥ ४५॥

॥ ठुमरी॥

आजु खेलो रंग होरी सइयां आजु खेलो रंग होरी हो। दशरथ राजकुमार छैल तुम कालिंदकरी बरजोरी हो॥ तुम रघुवंश कुमार लाडिले मैं निमिवंश किशोरी हो। कौन बात में घटी हमारे यूथप सखी करोरी हो। रूप गुनन मैं नागर प्यारे हौं नागरि कछु थोरी हो। जुगलप्रिया मुसक्यात छबीलोकुञ्जमहल की पोरी हो॥४६॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ राग हिंडोल वसंत धमार ॥

आजु दोउ विहरत वन में राम रसिक सिया प्यारी। वन प्रमोद अति मोद पाय वसंतरितु संपति प्रगट कियो छवि भारी। द्रुम रसाल प्रति डार-डार मंजरी-मंजरी प्रति भंवर करत गुंजारी॥ यूथ यूथ नव नागरि आगरि विमलादिक तहाँ गान करति मनहारी॥ युगलप्रिया पुर नारि उमगि आई मेवा भरि-भरि कर कञ्चन की थारी ॥४७

खेलत वसंत रसिकाधिराज। रघुनन्दन सिय सङ्ग अलिसमाज। नव अंग-अंग वर वसन साज। वाजे मृदङ्ग अरु विविधि वाज॥ तहाँ अलिगन गावें सरस राग। रागी जन मन अनुराग जाग। कहे चन्द्रकला सुनिये जू लाल। प्रमोद वन फूल्यौ द्रुम रसाल॥ सजि गावत चलिये वसंत राग। मनमोहन दोऊ मिलि एक संग। आये जहाँ वन मध्य धाम। आयत विशाल सुखमा ललाम॥ तेहि मध्य कुञ्ज बैठे जू आय। तब चन्द्रकला वीना वजाय॥ नाचन लागी अलि विविधि भाव। गावहिं वसन्त अति सरस चाव। रितुराज सहचरी वेष कीन्ह। मेवा भरि थारन साज दीन्ह॥ फूलन सिंगार किये अपने हाथ। निरखत छवि होय रहे अति सनाथ॥ तब युगलप्रिया रुचि समय पाय। झोरी गुलाल होरी मनाय ॥४८॥

रंग होरी होरी होरी लाल। यह जोरी छवि लखि भई निहाल। अंग श्याम गौर चहुं ओर वाल। घन दामिनि पहिरे कनक माल॥ सिय सुभग भाल पिय दै गुलाल। जनु कनकलता पूजत तमाल॥ युगलप्रिया निरखत कृपाल। जनु होरी वांटत दै गुलाल ॥४९॥

सइयां जाने न पैहौ डारो न मो पर रङ्ग। श्रीमिथिलेश लली की अली सब आनि जुरी एक संग॥ सुनि सकुचाय रमाय दृगनदृग बोलत वचन उमङ्ग। काह करेगी विपुल नारि लगि जावो हमारे अङ्ग॥ कंठ लगाय भिजाय भिजे रङ्ग वढ्यौ परसपर जंग। जुगलप्रिया यह फाग अनोखी लखि रतिपति मद भङ्ग ॥५०॥

आजा पियरवा रसिक रघुनन्दन। रसिकराय रसिक हियचन्दन॥ याहि कुञ्ज मिलि रसिक रङ्गीली। आनि जुरी विमलादि छबीली॥ हमरो कुञ्ज मगमाहि रसीलो। तनिक विलंवि सरसरस पीलो॥ सुनि अलि वचन लाल मुसुकाये। मिलि तेहि सङ्ग लली ढिग आये॥ याही में ततसुख स्वसुख लखायो। जुगलप्रिया सेवा मनभायो॥५१॥

रसिया आनि मिलो मोहि जानकिवल्लभलाल। श्यामसुजान लली सङ्ग लीन्हें

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

निरखत होऊं निहाल ॥ फाग कुञ्ज रचना रचि राखी सकल रंगीली वाल। जुगलप्रिया तिनकी रुचि पालिये दोऊ परम कृपाल ॥५२॥

समय चैत

भवरा सँवलिया रामा हो गोरी कमल सिय प्यारी। एक सुकी अवधपुर आई पाती सुगन्ध पहुंचाई। वांचत ही मन विकल भयो आये गाधि सुवन उपकारी॥ ल्याये चरित्रवन पावन कीन्हीं सुरमुनि मनभावन। धनुषकथा सुनि हर्ष भये मुनि सङ्ग चलनि मतवारी। आये मिथिला सर वाही छवि जल अथाह जेहि माँही। अलिगन दल लखि मुदित परम मकरंद पान फुलवारी॥ यह रसिक जनन के दाया जव होय रहित छलछाया। तवही लोचन मग छवि छावत जुगलप्रिया वलिहारी ॥५३॥

निस दिन हो रट लागी रामारामा। जवते नारद ऋषि आये सिय प्यारी को कहि समुझाये तवही ते नेक नाही सोहायल धामा॥ निसि दिन हो॥ विश्वामित्र संग ले आये सपने में चरित जनाये मिलवे की आसा मन नहि विश्रामा। जुगलप्रिया की स्वामिनि विरहिनि दुति दवि रही दामिनि नैना लगि रहै सुन्दर श्यामा ॥५४॥

सांवरे सलोने प्यारे दशरथजू के लाल रामा हो। गोरी श्रीजनकदुलारी गोरी सोहै संग वाल रामा हो॥ सरजू के तीरे वंगला मनि जटित विशाल राम। चहुंओर गुलाव को वारिय सुखद सव काल। जुगलप्रिया दोउ रसिया ये करत रस ख्याल ॥५५॥

मोहनि मोपै डारी दइया दशरथजू के लाल मोरे रामा हो। मोहनि मूरति मोहनि सूरति मोहनी सव चाल॥ मोहनी श्रीजनकदुलारी मोहनी संग वाल। जुगलप्रिया के जीवन रसिकन प्रतिपाल मोरे रामा हो ॥५६॥

॥ राग सारङ्ग चौताल ॥

मोतिन महल तामे सरयू नहर लागी छूटत सुगंध यों गुलाव की फुहारे री। नवल निकुंज वन्यौ पुष्प गुलावन की फूल्यौ है चतुर्दिशा लषत किनारे री॥ तकथै फरस लागी प्यारी प्रिया प्रेम पागी अलीगन रंग रंगी तानै लै उचारै री। वीना मृदङ्ग मुचङ्ग आदि यंत्र वाजैं जुगल प्रिया रीझि रीझि तन मन धन वारै री ॥५७

॥ राग सोरठ मलार तेताला ॥

गल वहियां दिये बैठे दोऊ आय सरजू कुञ्ज पुलिन मनभाये। मनिन जडित कञ्चन की अवनी विपिन प्रमोद प्रभा दरसाये॥ चहुंदिशि अलिगन लसत निकाये। निरखि निरखि नव नेह बढ़ाये॥ सीस चंद्रिका क्रीट सुहाये। कुसुमी वसन भूषन

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

छबि छाये ॥ दैत परस्पर पान खवाये । मधुर मधुर बतिया बतराये ॥ रूप सुधा पीवत न अघाये ॥ अघटित प्रीति बरनि नहिं जाये । युगलप्रिया यह दंपति की छबि निरखत नैन रह्यौ मडराये ॥५८॥

रथ चढ़ि चले अवधपति लाल । बाम अंग सुहावनि रसरंगी सियाजू बाल ॥ चन्द्रकलाजू छत्र लीन्हें विमला चौर सुचाल । और सहचरि जंत्र लै प्रिय गान करति रसाल । लेति मृदंग टंकोर जोर सुदेति गति प्रतिपाल । युगलप्रिया समाज साज निहारि भई निहाल ॥५९॥

॥ रागमलार आडाचौतारो ॥

रथ चढ़ि चले सरयू तीर । रसिकनी मिथिलेशनंदिनि रसिक श्रीरघुवीर ॥ प्रथम मास अषाढ़ पावस वहत त्रिविध समीर । उमड़ि घुमड़ि घमंड घन धुनि व्यापि रही गंभीर ॥ श्याम गौर सुरंग अंग सुपहिरि कुसुमी चीर । जड़े भूषण नगन के छवि देखु मन करि थीर ॥ हरित भूमि विभाग कंचन जटित मनिगन हीर । हरित द्रुम सघनावली खग मधुर बोलत कीर ॥ सहचरी गन अमित चहुं-दिशि गान तान सुधीर । युगलप्रिया सु उतरि रथ ते पूजि मानस नीर ॥६०॥

उमड़ि घुमडि आई बादर कारी । दशरथलालन जनकललीजू बैठे सखिन संग महल अटारी ॥ कुसुमी वसन युगल तन राजत जगमगात भूषन उजियारी । अलकै विथुरि रही मुख ऊपर मुकुटचन्द्रिका लटक सँवारी ॥ चन्द्रावती मृदंग टकोरति चंद्रा तानपूरा करतारी । चन्द्रकलाजू बीन बजावति गावत उमग भरे पिय प्यारी ॥ अधिक प्रवाह बढ्यो सरयू को भरे प्रमोद विलोकत वारी । युगलप्रिया रसिकन के संपति अगम निरखि रतिपति बलिहारी ॥६१॥

उमडि घुमडि घन बरसत बारी । श्रीमिथिलेशनंदनी प्रीतम भीजत बन प्रमोद द्रुम डारी ॥ पीत बसन नीलांबर दोऊ ओढ़ि खरे भये युगलविहारी । मानहु घन दामिनि के भीतर चन्द्र चन्द्रिका सोभित न्यारी ॥ कुञ्ज कुञ्ज सुधि पाय अलीगन भीजत आई निरखि बिहारी । चंद्रकलाजू छत्र वोट किये महल पधारि सुधारि संभारी । भीजे बसन उतारि मोद भरे नवल बसन शृंगार सँवारी ॥ युगलप्रिया निवछावरि तनमन सबै भोग धरि आरति बारी ॥६२॥

॥ रागमलार जाजवंती चौताला ॥

रङ्गमहल के आंगन मध्य अष्टकुञ्ज कनक भवन रमन गौर श्याम जोरी । जैसो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

ई घन कारो दमकति दामिनि अङ्ग उपमेय लै हुलसि हिये गोरी ॥ चहुंदिशि अलिन के कुञ्ज मनोहर लसति सप्त खंड अटा आई एक ठौरी। सेवा सावधान माण जानकिवल्लभ नवलकिशोर प्यारी नवलकिशोरी ॥ कोउ जन्त्र वीना लै प्रवीन तानपूर कला पावस मलार टेरि मृदंग टकोरी। तान तरंग मगन सुख सिन्धु माहि युगलप्रिया मति गति भई भोरी ॥६३॥

ख्याल

झूलन आई रंग हिंडोरे वे जनककिशोरी सङ्ग वाम। सरयू तीर सुखद प्रमोद वन रंगमहल छविधाम ॥ सुस्वमा सील सनेह भरी गावति झूलन गुनग्राम। युगलप्रिया दंपति छवि निरखत मुर्छित भये रति काम ॥६४॥

ठुमरी

रंग झूलना रे झूले। श्रीजानकीवल्लभ रङ्गमहल विच कुञ्ज मनोहर अद्भुत सरयूकूलना रे ॥ कमला विमला चमर डुरावति कोटिन रति समतूलना रे। जैश्री-चन्द्रकलादि सहचरी युगलप्रिया छवि मूलना रे ॥६५॥

झूलैं श्रीजानकीवल्लभ रङ्ग हिंडोरना रे। रंग-पटुली चौकीडारी छतुरी अद्भुत मणि गन तोरना रे। कञ्चन खंभे जटित रंगमनि मरुवा वेलन मोरना रे। तापररंग मयूर की रंगन वोलत है चित चोरना रे॥ रंगभरी झूलन पद गावत ललनागन चहुं-ओरना रे। युगलप्रिया रसिकन मन उमगत सुनत मृदङ्ग टकोरना रे ॥६६॥

॥ रागमलार आड़ाचौताला ॥

दशरथजू के छैला हो राज झूला झूलो। तू तो रंगीला पिया हौ तो रंगीली और रंगीली सखी समतूलो। रंगभरी सरयू उमडी हैं रंग विपिनि सब फुलो। जुगलप्रिया नवरङ्ग साज सब लखि प्रीतम अनुकूलो ॥६७॥

॥ राग मलार ॥

रंग झूलें अवधविहारी हो सरयू तट संग लिये सिय प्यारी। सावन कुञ्ज सुहावन पावन रतन भूमि हरियारी ॥ निज निज कुंजन ते वनि आई नित्य सखी अधिकारी। गावहिं सरसाती वरसाती दरशाती सुख भारी॥ कवहुं झुलावत प्यारी प्रीतम कवहुक प्रीतम प्यारी। युगलप्रिया रसमत्त परस्पर दंपति लीलाधारी ॥६८॥

हिंडोरे झूलैं श्रीजानकीजान। युगल प्रकाश कुञ्ज कंचनमय विपिन प्रमोद लतान। श्यामवदन पर जुलफैं छोडे मन्द मन्द मुसुक्यान ॥ प्यारी संग समाज

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

अलीगन लेत नई नई तान। जुगलप्रिया वारत तन मन धन करति निछावरि प्रान॥६९॥

रसिक दोउ झूलत सरयू तीर॥ रघुनन्दन अरु जनकनन्दिनी श्यामल गौर शरीर। राजत छबिमैं रतन हिंडोरा तापर बोलत कीर॥ गावहिं छवि अवलोकि मे मभरि चहुंदिशि सखिन की भीर। बाजत वीन मुचंग उपंग मृदंग ताल अति धीर॥ जुगलप्रिया अति सुख वरसत जब लेततान गंभीर॥७०॥

किशोरी संग झूलत नवलकिशोर॥ दशरथनन्दन जनकनन्दिनी सुन्दर श्यामल-गौर। सरजू तीर सुखद प्रमोदवन विश्व भूमि शिरमौर॥ तामधि मणिमय रचित हिंडोरा लसत हेममय डोर। चन्द्रकला सखि हरषि झुलावति विमला ढोरति चौर। जुगलप्रिया यह मधुर केलि लखि सुधिबुधि सब भई भोर॥७१॥

॥ राग जंगला॥

पिय सांवरे सलोने झूला झूलो। जैसी ये रंगभरी सिय प्यारी अलिगन त्यों सम तूलो। तैसी ये रंगमहल छबि अद्भुत बनप्रमोद सुख मूलो। श्रीसरयू मणि जटित घाट दोउ कंज प्रफुल्लित फूलो॥ सुनत हिंडोर कुञ्ज ढिग आये पिय प्यारी दिल दूलो। जुगलप्रिया के जीवन धन दोऊ सदा रहो अनुकूलो॥७२॥

॥ राग जाजवंती॥

अलि फूलन हिंडोरे झूलैं जनककिशोरी। फूलन के चौकी राजैं फूलन की डांडी भ्राजै फूलन की छतुरी सोहै फल खंभे डोरी। फूलन के तकिया प्यारी फूलन विछौना वारी पिय अंस भुजधारि राजत जोरी॥ फूलन सिंगार किये अलिगन लखिजियै गावति सरसराग प्रमुदित गोरी। विपिनि प्रमोद वागे फूलकुञ्ज अनुरागै युगलप्रिया चकित लखि त्रिनतोरी॥७३॥

॥ रागमलार ध्रुपद चौताला॥

झूलत सावन कुञ्जन सुरंग हिंडोरे सिय प्यारी संग रंग लाल। रंग प्रमोदवन-रंग घटा वरसत रंग मलार गावति रङ्गवाल॥ रङ्ग मृदङ्ग वाजे रङ्गसारङ्गी साजे रङ्गमुचंग रङ्ग कठताल। युगलप्रिया रङ्गरङ्ग सरयू रंग महल झरोखे रंग रंग जाल॥७४॥

झूलत रसिक राम श्याम सुखधाम सियाजू रंगीली वाम झूलति उमंग मैं॥ तैसी चन्द्रकला विमला कमला चंद्रवतीजू चन्द्रा अनूप तान गान की प्रसंग मैं। आईं पुरवासिनि विलासिनि सियाजू की विभव विलास देखि थकी छकी रंग मै। युगल-प्रिया जाचे रसिकजनन संग सांचे पहिरसमाचै राचै पाउं निज अंग मैं॥७५॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ राग ख्याल ॥

सबहिं चलोरी झूला झूलें। श्याम रंग हिंडोरे ॥ सरयु तीर सुखद मनि महलें अतर गुलाब सुगंधन चहले वन प्रमोद चहुंओरे। बोलत कोकिल मोर चकोरे। कंचन खंभ जड़ाऊ राजै छतुरी डांडी अद्भुत भ्राजै पटुली रंगविरंग विराजै निरखत हीं चित चोरे॥ मंद मंद मुसकावत प्यारे प्यारी के अंसन भुजधारे युगल-प्रिया कर सों करजोरे रतिपति को मद छोरे ॥७६॥

सबहिं झुलावो री हिंडोरे अलबेली राजकुमारी। सावन तीज सोहावन राजे विविधि भांति के भूषन साजें अंगन प्रति कोटिन रति वारिय प्राण करौं वलिहारी। कमला विमला चँवर ढुरावै गान कला सु मृदंग वजावै चन्द्रकला कछु तान सुनावै लाल देत करतारी। सुख समुद्र श्रीजनकदुलारी रघुनंदन की प्राणपियारी। युगलप्रिया तन मन धन वारी वारि वारि डारी ॥७७॥

दौरि दौरि आवै वादर सरयू की कुञ्ज मांही रे झोंका दै रंगीली सखियाँ सावन झुलावे हो। श्याम गौर अंग मिलि झूले एक संग दूजो घन दामिनिनिरखि छबि पावै हो॥ कानन कुण्डल जरे अंगनि भूषण भरे चंद्रिका किरीट मनभावे हो। नूपुर पगनि शोभा काम कोटि मनलोभा युगलप्रिया की हिय हरष न मावे हो ॥७८॥

पियरवा रंग वरसे पियरवा जनकसुता संग रंगमहलवा। युगलप्रिया तहाँ रास-रच्यौ पिया गावत रंग भरे वीन वजावति चन्द्रकला सुख चहल पहलवा ॥७९॥

रे मन क्यों न भजे दोऊ मूरति। श्रीमिथिलेशलली रघुनन्दन जगसुख विष करि जानि मानि भलि भाँति विचारि कै देखु। गौरश्याम अद्भुत रङ्ग भीने नेकु छटा अवरेखु॥ छवि उपमा नहिं जूरति॥ रे० ॥ जाको यश निगमागम सुरमुनि नेति नेति करि गाय। पीवत जीवत भक्ति अमल रस बारवार सुखपाय॥ भक्तिनि मति गति पूरति॥ रे० ॥ अवधधाम सब धामन के पर श्रुति सिद्धांत बखानि। जगमगाति मणिमय भूमावलि युगलप्रिया पहिचानि॥ रसिकन मत करि सूरति॥ रे० ॥ ८० ॥

सब विधि सुलभ पाय तन दुर्लभ क्यों न भजे रघुनन्दन रे मन। जनकनन्दिनी चरणरज बन्दत सब सुखपाय॥ उदयहोति अविरलि भक्ति तब रघुनन्दन ध्याय ऐसे जन जगबन्दन॥ यह मारग रसिकन विना और न जानै कोई। जानै सो

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

रसिकन कृपा सपनेहु मोह न होई ॥ मिटि गई सब जगफन्दन ॥ नाम रूपलीला समुझि नित्यधाम पहिचानि । युगलप्रिया सम्बन्ध पद दिव्य अमल रसखानि ॥ सङ्ग त्याग मति मंदन ॥८१॥

॥ राग भैरो चञ्चरीक ॥

चले दोउ कुञ्ज सरजू तट को सखिन सङ्ग अलसाने दिये गलबाँहीं । विथुरित अलकावली मुखारविन्द शोभित सुखमा सनेह रसिकन दृग-कंज मंजु प्रफुलित जनु युगलभानु प्रगटे बनमाहीं ॥ छये तस्करादि जेते रसिक भाव दुखित रहे सूख्यौ तैहि हृदैवारि रास ध्यान नाहीं । युगलप्रिया रसिकन के हृदय वारि रासध्यान बैठक सजि पुलकत आनन्द रोम रोम अम्बु जाहीं ॥८२॥

॥ राग ई मन चौताला ॥

ए आनि बैठे हैं दोऊ श्रीकनकनिकुञ्ज मध्य सङ्ग सियाप्यारी और प्यारोराम । वरण वरण अली चहुंदिशि अंगराग तनी सोहति मोहति तान तरंगिनि वाम ॥ चन्द्रवतीजू मृदंग गति उघटति चन्द्रकला वीन लै उमंग अति सुखधाम। गानकला सप्तस्वरनि सुखदा जु सुख देती लेत वलैया युगलप्रिया नाम ॥८३॥

आजु चलि देखोरी आली श्रीरामरसिक पिय रास रच्यो सुखदाई । रासभूषन वसन श्याम सलोने अङ्ग लोनी लली सङ्ग लोनी अली समुदाई । वीना मृदंग मुचंग कठतार चंग वाजत ईमन राग परमसोहाई । युगलप्रिया गान करहिं चन्द्रकला लालप्यारी उमंगि तान छाई ॥८४॥

॥ राग परज ॥

भटकी क्यों खड़ी चलि मिलिये श्यामसुन्दर के अंग । सुनु सजनी रजनी झुकि आई रास रमत सिय प्यारी संग ॥ सुनत चली रंगरली अली श्रीजनक लली ढिग मिलि सुढंग । नटतलाल लखि भई निहाल तहं युगलप्रिया मुर्छित अनंग ॥८५॥

अटकी तू भली सुचि शरण श्रीजनकलली री । सुनु अली जासु विवस रघुनंदन कलवल नाहिं चली री ॥ धन्य भई जो रली लली संग कलिवलि छलि न छली री । युगलप्रिया प्रमोदवन संपति मिलि रंग रसिक गली री ॥८६॥

रसिया रामविहारी श्याम । बैठे कनक भवन सिंहासन जनकसुता लिये वाम । सजि सिंगार अली विमलादिक चन्द्रकला सुखधाम ॥ श्रीयुगलप्रिया तिनकी लघुचेरी महल टहल विश्राम ॥८७॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ राग काफी एकताला ॥

धनुहिया वारो श्याम हमारो प्रान । डोलत वन प्रमोद विच सजनी मन्द मन्द मुसकान ॥ शीश जड़ाऊ पाग लसत अति मोती कुण्डलकान । जगमग द्युति मन-हरत सवन के नाशामणि चमकान । वक्षस्थल नाभी रोमावलि कटि प्रदेश सुखदान। पीत वसन युत युगल जंघवर जानु पुष्ट परिमान । नखद्युति अमल कमल कोमलतल उपमा अरु उपमान ॥ युगलप्रिया सब घटित लली अङ्ग अनत नहीं यह शान॥८८॥

॥ एकताला हमीर ॥

सियावर साँवरे छवि देखि । रहत न तन मन सुधि कछु सजनी लगत न नैन निमेखि ॥ सजि सिंगार परस्पर दोऊ गलवाही वर वेखि । युगलप्रिया अलि चन्द्रकलादिक सुफल सुजीवन लेखि ॥८९॥

॥ राग मारू तिताला जलद ॥

हमारी हो स्वामिनी सिय जू । कृपाखानि मुसकानि मनोहर वसि करनी पिय जू । चंद्रकलादि अली गुन आगरि नागरी प्रिय जू । वसहिं सदा जब कृपा करहिं निज युगलप्रिया के हिय जू ॥ ९० ॥

रसिकवर हो जानकीवर श्याम । सदा एक रस नित्यविहारी श्रीप्रमोदवन धाम॥ श्रीमिथिलेशनंदिनी सियजू चन्द्रकलादिक वाम । युगलप्रिया छकि रहे रसिकजन यहि रस आठोयाम ॥९१॥ ॥ राग पूरवी एकताला ॥

खेलत नै हरे न वारी लाल । श्रीसरयू परिखा मिलि आई पूरब कोट के नाल ॥ मधुर मोरपंखी ता ऊपर वैठे युगल कृपाल । चमर क्षत्र विजनादि करहि अलि छवि लखि होत निहाल ॥ पूरब तट प्रमोद वन कुञ्ज ते निरखहि अलि छवि जाल । आनि फंदे दृग मीन सबनि के युगलप्रिया सुविशाल ॥९२॥

॥ राग एकताला मलार ॥

झूमि झूमि छायो रस अखियाँ । गरज मेह नेह वोलनि मै नव घनश्याम राम जिन लखियां । दामिनि सी दमकति अङ्ग अङ्गनि गौर वरन चहुंदिशि लसे सखियाँ॥ युगलप्रिया हिय नटत रसिक जन ज्यों मयूरि शिर पर करि पखियाँ ॥९३॥

॥ राग सोरठ मलार जलद तेताला ॥

रसिक रसमाते वोलनि पै । वारिय तन मन वन प्रमोद कल कुञ्जनि डोलनि पै ॥ मिथलापति की लली अलिन सङ्ग आवनि वोलनि पै । मिलि जुलि युगल-प्रिया रसवतियां छतियां छोलनि पै ॥९४॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

॥ राग सुलतानी गौरी ॥

रंगीले प्रीतम राम तुम राजत नव घनश्याम ॥ उमड़ि घुमड़ि आये मिथिलापुर धनुषभङ्ग धुनि जान। मण्डप में बिजुरी सी प्यारी चमकति रसिकन प्रान ॥ छवि जल वरखि करखि चित सबके रखी नगर नरनारि। तिनमें सालि अधिक सुख रसिकन विपिन प्रमोद विहारि ॥ निवसत रंगमहल गिरि ऊपर कनक भवन छवि ऐन। विपुल सखी मिथिला ते आई सेवति है दिन रैन ॥ रासविलास करत प्यारो संग सोवत शैन निकुञ्ज। युगशप्रिया विरहिनि को लै चलु जहाँ सकल रसपुँज॥९५॥

॥ रागदेशख्याल ॥

मेरी राजति सिय ठकुरानी देखो रामलला हो श्याम। कनक निकुञ्ज की अटारी॥ चन्द्रकलादि सहचरी सारी मगजोवत तुम्हरो आगम छवि गावति हैं सब वाम। उठे मन्द मुसकात प्रवीने चले कुञ्ज दिशि को रुख कीन्हे युगलप्रिया तव खबर कही मिलि विहरो आठोयाम ॥९६॥

॥ रागसिंधु ॥

नेक दरश देखा जा हो नृपलाला। मैं तो थारी दासी वारिये छैला अवध-विहारी अखियाँ रूप पिला जा ॥ युगलप्रिया की स्वामिनि जनक लली सुकुमारी आई सकल सुख साजा ॥९७॥

॥ राग तैलंगी ॥

देखि के अरुझान्यो जियरा। रामकुमार श्यामसुन्दर छवि हम ही नहीं सबहिन के हियरा ॥ वनप्रमोद बिच जनक लली संग अली सकल जुरि आई नियरा ॥ युगलप्रिया येहि छवि निरखन को हिय बिच वारुँ सुरति के दियरा ॥९८॥

श्याम सलोने से लगी मोरी नैना वन प्रमोद प्रति कुञ्ज निकुञ्जनि डोलत फिरत वदत मृदु बैना ॥ आनि मिली तेहि समय सियाजू संग लिये अलिगन की सैना। युगलप्रिया अनुराग विलोकनि युगल कमलमुख अपर न चैना ॥९९॥

॥ ठुमरी ॥

मोंपै रस की चितवनि डारी। हो दशरथजू के लाल ॥ कटि पीतांबर धोती सोहै लाल पाग शिर न्यारी। तापर तुर्रा अधिक मनोहर मोतियन झालरदारी ॥ विहरत फिरत प्रमोदविपिनि में श्यामवरण मनहारी। नाशामणि की लटक चालपर युगलप्रिया वलिहारी ॥१००॥

॥ राग सोहनो ॥

लाल छवि देखो सिय प्यारी की। चटक रंगीन सावनी आवनि मिथिला की सारी की। मनभावनि लावन्यलुनाई तार-चौपकारी की। लखत किनारी सुधि बुधि वारी युगलप्रिया वारी की ॥१०१॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

लखु भामिनि भली यामिनी शरद की। श्रीसरयू तट रासकुञ्जमणि मण्डल कंचन भूमि जरद की ॥ तन्यौवितान स्वेत जरकस की फरस विछे वहु वसन फरद की। रासरच्यो प्रीतम रघुनन्दन सिय प्यारी सुख विमल हरद की ॥ अलिगन विपुल विचित्र मण्डली साज काम रति मान मरद की। युगलप्रिया छवि लखत विरहिनी लगन लग्यौ याते सौं नरद को ॥१०२॥

॥ राग काधरा ॥

अलि छवि देखु शरद की यामिनी। विमल अकाश चन्द्र परिपूरण रासकुञ्ज चलिये गजगामिनि ॥ देखी जाय विपिन अद्भुत मण्डल विभाग मणि भूमि सुनामिनि। नटवर अद्भुतवेष रसिकमणि अद्भुत चन्द्रकलादिक भामिनि ॥ अद्भुत अवध रंगमणि महलै अद्भुत श्रीसरयू वर कामिनि। नटति परस्पर वाहाँ जोरी अद्भुत युगलप्रिया की स्वामिनि ॥१०३॥

॥ ध्रुपद चौतारो ॥

रैनि दिवारी की वनी है आजु प्यारी छवि भारी पिय प्यारी खेलै चौपरि संग अली। चली हैं विपुलनारी थारैं करकंजधारी वाजैं अनुहारि गावै अवध रंग गली। हास विलास परस्पर करतारी देत निज निज दांव भाव सर्वअंग भली। युगलप्रिया लोचन रसाल मृदु मुसकाते जीती है किशोरी पिय रंग की अनंगडली ॥१०४॥

देखु सखी भलीरैनि दिवारी। खेलत चतुर रंग भरी चौपर दशरथनन्दन जनककुमारी। दीपपंक्ति चहुंओर विराजित अलिगन अंग सरस उजियारी। विपुलकला गुननिपुन विहारिणि तैसे सुन्दर अवध विहारी ॥ विमलादिक पियवोर भई हंसि सिय दिशि चंद्रकलादिक नारी। हासविलास परस्पर सरसत दरसत रसिक प्राण वलिहारी ॥ यह सुखसाज समाज प्रसंसित होत परमसुख दांव सँभारी। जीती श्री मिथिलेशनंदिनी युगलप्रिया पिय तन मन वारी ॥ १०५ ॥

जो मेरो अवगुन उरधारो। तौ मिथिलेसनंदनी स्वामिनि कोटिकल्प नहिं मोर उवारो ॥ कौनसी कृयाकीन्ह मैं नाही यह संसार असार पनारो। वेदविदित यह विरद तिहारो सीसीसीसीकत नाम विचारो ॥ जो ब्रह्माण्ड कोटि को नायक-प्रीतम रामस्याम छबिभारो। तववस रहतसदा सोपिय नायकरसिक सिरोमनिछवि मतवारो यह जिय देषि पैषि प्रभुता निज नातो मिथिला ओर निहारो। रूपअनूप सीलगुन सीमादासी युगलप्रिया न विसारो ॥ १०५ ॥

रागबहारचौतारो।

येई अवधधाम येई विपिनप्रमोद काम। येई रंगमहल येई सरजुकुन्ज प्यारी। येई युगलनाम येई रूपगौर स्याम युगल चंद्रकलादि वाम रहसि पुंजबारी। येई

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah

Digitized by Sarayu Foundation Trust, Delhi and eGangotri. Funding by IKS.

युगलरीति कै प्रतीतीप्रीति पालक जो रसिक नरेस अग्रस्वामी वलिहारी ॥ चरन कमलमंजु रसिकभ्रमपुंज युगलप्रिया तिन रसिकन चरन उरधारी ॥ १०६ ॥

अवध लखि जन्म सुफल करिहौं । सरजू छवि हिय धरिहौं । विपिन प्रमोद बाग कुञ्ज कुञ्ज अनुराग कोट विचित्र लखि परम सुहाई खाई उतरि पार परिहौं ॥ चारुशिलाजू की परम कृपा अलि मिलि तेहि संग महल जाय छवि नैन शैन भरिहो । युगलप्रिया है चेरी चन्द्रकलाजू की नेरी अभय करि दोउ प्रिये मिलाय अब काहु की नहिं डर डरिहो ॥

न आये सैंया कौन सी चूक परी । यह प्रमोद बन मोद कहां गयो विरह अनल में जरी ॥ हैं सरजू सरि शीतल करनी सो गुन कहां धरी । युगलप्रिया अवधेश ललन बिनु बीतत कलप घरी ॥

न जानों सैयां कौन घरी की बात । जाते रूठि रहे रघुनन्दन तलफत रैनि बिहात ॥ हम ते बैर प्रीति औरन ते करत बितावत रात । युगलप्रिया ऐसी नहिं चाहिये सुन्दर श्यामल गात ॥११०॥

रंगीला मेरा बनरा श्यामल गात । नीलमणी अरु नील घटा सम कहत सुकवि सकुचात । धाम अवध सरजू तट सुन्दर मातु पिता अरु भ्रात ॥ नाम मनोहर राम काम प्रद जपत संत दिन रात ॥ रूप वरणि नहिं सकत शेष श्रुति और मुनिन की बात । युगलप्रिया लीला अनंत सत कोटि ते अधिक सोहात॥१११॥

हो रामा नेकु चितै दै रङ्ग भरी तोरी अखियां । नृपति कुमार उदार शिरोमनि दूर गई सङ्ग की सखियां ॥ सुनत बैन मुसकाय भाय भरि हिय लगाय जिय रखियां । युगलप्रिया तन मन धन वारहिं यह सुभाव जिन लखियां ॥११२॥

बैठे कल्पद्रुम छंहियां हो राम देखो सखी । श्रीमिथिलेस लली रघुनन्दन सोहत दिये गलबहियाँ हो रामा । मृदु मुसुकनि चितवति मृदु बोलनि अमिय चुवत छहियां हो राम । युगलप्रिया यह जोरी छवि लखि उपमा कहं कोउ नहियां हो राम ॥११३॥

चलो सखि सरजू तीर बसि रहिये हो राम । जहां बिहरत दोउ नित्य बिहारी नाम रूप रति चहिय हो राम ॥ वन प्रमोद द्रुम कुञ्ज कुञ्ज प्रति बिहरनि की छवि लहिय हो राम । युगलप्रिया जहां अमित सहचरी भाव रीति ढिग गहिय हो राम॥११४॥

जै श्री जानकी वल्लभलाल । मणिमंदिर श्रीकनक महल में विथुल रंगीली-वाल ॥ कोउ गावति कोउ वीनवजावति कोउ मृदंग कठताल । युगलप्रिया रिझ-वति दोउलालन छविलखि भई निहाल ॥११५॥

इति श्रीयुगलप्रियाकृत पदावली समाप्तम् ॥

In Public Domain, Chambal Archives, Etawah